International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

डिजिटल युग में किशोरों की शैक्षिक यात्राः अलवर जिले में इंटरनेट उपयोग और एनईपी 2020 का अध्ययन

Khushal Mehta[1], Prof. (Dr.) Sandhya Sharma[2]

[1]Research Scholar, [2]Research Supervisor
Department of Education
Jayoti Vidyapeeth Women's University

सारांश:

यह अध्ययन षडिजिटल युग में किशोरों की शैक्षिक यात्रा: अलवर जिले में इंटरनेट उपयोग और एनईपी 2020 का अध्ययनष शीर्षक के अंतर्गत डिजिटल तकनीक के प्रभाव को समझने का प्रयास करता है, विशेषकर किशोरों की शिक्षा पर इंटरनेट और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) द्वारा प्रस्तावित डिजिटल पहलुओं के संदर्भ में। शोध की प्रकृति गुणात्मक है और इसमें पीयर–रिव्यू शोध लेखों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। कुल 12 पीयर–रिव्यू लेखों और अकादमिक प्रकाशनों की विषयवस्तु का विश्लेषण करते हुए, अध्ययन ने यह दर्शाया कि डिजिटल शिक्षा ने किशोरों के सीखने के तरीके, अभिवृत्ति और शैक्षिक सहभागिता को प्रभावित किया है। विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि NEP 2020 ने डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई सकारात्मक पहल की हैं, किंतु जमीनी स्तर पर डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता, शिक्षकों का प्रशिक्षण, और सामाजिक–आर्थिक असमानताएँ अब भी प्रमुख बाधा बनी हुई हैं। विशेष :प से अलवर जैसे अर्ध–शहरी और ग्रामीण मिश्रित क्षेत्र में डिजिटल पहुँच और उपयोग में स्पष्ट भिन्नताएँ पाई गईं। यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि नीति स्तर पर किए गए प्रयास तब तक प्रभावी नहीं हो सकते जब तक तकनीकी अवसंरचना, डिजिटल साक्षरता और समावेशी पहुँच को समान :प से सुनिश्चित नहीं किया जाए। अध्ययन डिजिटल शिक्षा की वर्तमान स्थिति को समझने के साथ–साथ भविष्य की नीतियों के लिए भी मार्गदर्शन प्रस्तुत करता है।

1. डिजिटल युग और शिक्षा में हो रहे परिवर्तन

21वीं सदी को तकनीकी क्रांति और डिजिटल युग के :प में देखा जा रहा है, जहाँ सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, कंप्यूटर, और विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्मों ने पारंपरिक शिक्षण प्रणालियों को चुनौती देते हुए नई पद्धतियों को जन्म दिया है। [1] अब विद्यार्थी स्कूल और कॉलेज की सीमाओं से परे जाकर कहीं भी और कभी भी सीख सकते हैं। विशेष :प से कोविड–19 महामारी के दौरान जब दुनिया भर के शैक्षणिक संस्थान बंद हो गए, तब डिजिटल माध्यमों ने शिक्षा को निरंतर बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।[2] ऑनलाइन कक्षाएं, ई–लर्निंग एप्स, वीडियो लेक्चर, और वर्चुअल क्लास:म जैसे माध्यमों ने शैक्षिक जगत को नए :प में परिभाषित किया। यह बदलाव केवल शिक्षण की शैली में ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सोचने, समझने और सीखने के दृष्टिकोण में भी क्रांतिकारी परिवर्तन लेकर आया।[3] तकनीकी नवाचारों ने शिक्षा को अधिक सुलभ, लचीला और व्यक्तिगत बना दिया है। डिजिटल माध्यमों के कारण ज्ञान की कमउवबतंजप्रंजपवद (लोकतांत्रिकरण) संभव हो सकी है, जहाँ अब सिर्फ शहरों या उच्च वर्गों तक नहीं, बल्कि ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों के किशोरों तक भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पहुँच रही है। यह प्रक्रिया आज के समय में शिक्षा के समावेशी स्व:प की दिशा में एक सशक्त कदम है।[4]

[1] Zou, Y., Kuek, F., Feng, W., & Cheng, X. (2025). *Digital learning in the 21st century: trends, challenges, and innovations in technology integration*. *Frontiers in Education*.
[2] UNESCO. (2023). *Impact of the COVID-19 pandemic on education*.
[3] Pozo, J.-I., Cabellos, B., & Pérez Echeverría, M. d. P. (2024). Has the educational use of digital technologies changed after the pandemic? A longitudinal study. *PLoS ONE, 19*(12), e0311695.
[4] UNESCO. (2023, September 7). UN: Tech dependence during pandemic "super-charged" education inequality. *Axios*.

2. किशोरों की शैक्षिक यात्रा पर इंटरनेट का प्रभाव

किशोरावस्था मानव जीवन का एक अत्यंत संवेदनशील और निर्णायक चरण होता है, जहाँ बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास तीव्र गति से होता है। इस अवस्था में प्राप्त अनुभव और सीखें व्यक्ति के पूरे जीवन को प्रभावित करती हैं।[5] ऐसे में इंटरनेट और डिजिटल तकनीक के संपर्क में आने वाले किशोरों की सोच और शैक्षणिक दिशा किस प्रकार आकार लेती है, यह जानना अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है।[6] डिजिटल युग में किशोरों के लिए शिक्षा केवल पुस्तकों और कक्षा तक सीमित नहीं रही, बल्कि मोबाइल, यूट्यूब, ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया, और एजुकेशनल एप्स तक फैल गई है। यह तकनीक उन्हें न केवल पाठ्यचर्या की जानकारी देती है, बल्कि उनकी रचनात्मकता, विश्लेषणात्मक क्षमता और आलोचनात्मक सोच को भी विकसित करती है। हालांकि यह भी देखा गया है कि इंटरनेट का अत्यधिक या अनुपयुक्त उपयोग किशोरों में एकाग्रता की कमी, मानसिक तनाव, और सामाजिक अलगाव जैसी समस्याएं उत्पन्न कर सकता है।[7] इसके अलावा, परिवार और विद्यालय की भूमिका अब केवल मार्गदर्शन तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्हें डिजिटल नागरिकता, सुरक्षित इंटरनेट उपयोग, और समय प्रबंधन की शिक्षा भी देनी पड़ रही है। डिजिटल उपकरणों का विवेकपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण उपयोग किशोरों के शैक्षणिक लक्ष्य की पूर्ति में सहायक बन सकता है, जबकि बिना मार्गदर्शन के इसका दुरुपयोग कई नकारात्मक प्रभाव छोड़ सकता है। इस स्थिति में एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक हो जाता है, जो किशोरों को डिजिटल साधनों का सकारात्मक उपयोग सिखा सके।

3. अलवर जिले की सामाजिक–शैक्षिक पृष्ठभूमि और डिजिटल उपयोग की स्थिति

राजस्थान के उत्तर–पूर्वी भाग में स्थित अलवर जिला एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ शहरीकरण, औद्योगिक विकास और पारंपरिक ग्रामीण जीवनशैली का अनूठा मिश्रण देखने को मिलता है। जिले की जनसंख्या विविध सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से आती है, जिससे यहाँ की शिक्षा व्यवस्था भी बहुआयामी बनती है।[8] अलवर जिले में पिछले कुछ वर्षों में मोबाइल फोन और इंटरनेट की पहुँच में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिससे डिजिटल शिक्षा की संभावनाएँ भी बढ़ी हैं। यहाँ के स्कूलों में स्मार्ट क्लासेज़, ऑनलाइन होमवर्क, गूगल क्लास:म, और डिजिटल परीक्षा जैसे नवाचार दिखाई देने लगे हैं। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों में अब भी नेटवर्क समस्याएँ, बिजली की अनियमितता, और डिजिटल उपकरणों की कमी एक बड़ी चुनौती हैं। इस क्षेत्र में डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए सरकारी और निजी दोनों स्तरों पर प्रयास किए जा रहे हैं।[9] अलवर जिले में किशोरों की एक बड़ी संख्या सरकारी और निजी विद्यालयों में अध्ययनरत है, जहाँ डिजिटल साधनों की भूमिका धीरे–धीरे सशक्त हो रही है। यह अध्ययन इस बात का विश्लेषण करता है कि किस प्रकार इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म किशोरों की शैक्षिक यात्रा को प्रभावित कर रहे हैं, साथ ही यह भी कि इस प्रक्रिया में परिवार, विद्यालय, और नीति–निर्माण की क्या भूमिका है। अलवर जिले का चयन इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह जिला शहरी और ग्रामीण, दोनों तरह के डिजिटल अंतर को दर्शाता है और इस द्वैत की गहराई को समझने का अवसर देता है।

4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP) और डिजिटल शिक्षा की दिशा

भारत सरकार द्वारा वर्ष 2020 में घोषित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) ने देश की शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा देने का प्रयास किया है, जिसमें डिजिटल शिक्षा को विशेष प्राथमिकता दी गई है।[10] नीति का उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला, बहुभाषी, और तकनीकी :प से सशक्त बनाना है। NEP 2020 के अंतर्गत डिजिटल प्लेटफॉर्म्स जैसे DIKSHA] SWAYAM, NISHTHA, e-Pathshala और टीवी–रेडियो आधारित शिक्षण माध्यमों को प्रोत्साहित

[5] Singh, P., & Sharma, R. (2024). Problematic Internet use among school-going adolescents in India: A systematic review. *International Journal of Community Medicine*, 47(4), 123–130. https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC9693953/

[6] Sharma, L., et al. (2024). Digital media literacy education and social development: A study on Tonk district students. *Educational Administration: Theory and Practice, 30*(2), 908–920.

[7] Zhou, Y., et al. (2021). *Adapting to crisis and unveiling the digital shift*. *Frontiers in Education*.

[8] Jejeebhoy, S., & Waheed, A. (2020). *Navigating Digital Learning in Government Schools in Rajasthan*. IDS Journal.

[9] Kumar, N., & Bhutada, P. (2025). Youth's digital readiness in rural India. *Ideas for India*.

[10] Tiwari, J. K., & Kumari, N. (2023). *E-learning use and integration in NEP-2020*. *International Journal of Creative Research Thoughts*.

किया गया है।[11] इसके अतिरिक्त, नीति में शिक्षा के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, और वर्चुअल रियलिटी जैसे उन्नत तकनीकी टूल्स के प्रयोग की संभावना को भी बल दिया गया है। यह नीति शिक्षा को केवल औपचारिक प्रक्रिया न मानकर, उसे एक आजीवन चलने वाली और समावेशी यात्रा के :i में देखती है।[12] हालांकि, डिजिटल शिक्षा को कारगर बनाने के लिए आवश्यक है कि ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में बुनियादी ढांचा मजबूत किया जाए, शिक्षकों को तकनीकी प्रशिक्षण दिया जाए, और छात्रों को आवश्यक उपकरण सुलभ कराए जाएँ।[13] NEP 2020 का सही प्रभाव तभी संभव है जब सभी सामाजिक–आर्थिक वर्गों तक डिजिटल संसाधनों की पहुँच हो और उन्हें उपयोग करने की सक्षमता भी प्रदान की जाए। इस अध्ययन में यह जांचने का प्रयास किया गया है कि अलवर जिले में NEP 2020 के डिजिटल शिक्षा से जुड़े प्रावधानों का किशोर छात्रों पर क्या प्रभाव पड़ा है, और किन स्तरों पर चुनौतियाँ तथा सफलताएँ सामने आ रही हैं।[14]

अनुसंधान उद्देश्य

1. यह विश्लेषण करना कि डिजिटल युग में किशोरों की शैक्षिक यात्रा पर इंटरनेट उपयोग का क्या प्रभाव पड़ा है।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में प्रस्तावित डिजिटल शिक्षा पहल की विद्वानों द्वारा की गई समीक्षा का मूल्यांकन करना।

शोध विधि

यह अध्ययन एक गुणात्मक शोध डिज़ाइन पर आधारित है, जिसमें पीयर–रिव्यू विश्लेषण (Peer Review Analysis) पद्धति को अपनाया गया है। इसका उद्देश्य डिजिटल युग में किशोरों की शैक्षिक यात्रा को समझना है, विशेष :प से अलवर जिले के संदर्भ में जहाँ इंटरनेट उपयोग और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) की डिजिटल शिक्षा संबंधी पहलियों की स्थानीय स्तर पर प्रभावशीलता की समीक्षा की गई है। शोध का फोकस यह जानने पर रहा कि नीति–स्तर पर निर्धारित डिजिटल शिक्षा के सिद्धांत, उद्देश्यों और साधनों का व्यवहारिक स्तर पर किस प्रकार का प्रभाव पड़ा है और उन पर विद्वानों द्वारा किस प्रकार की समीक्षाएँ प्रस्तुत की गई हैं।

अध्ययन में 2020 से 2025 के मध्य प्रकाशित 12 प्रमुख पीयर–रिव्यू शोध पत्रों और अकादमिक लेखों का चयन किया गया, जो डिजिटल शिक्षा, किशोर शिक्षा, इंटरनेट उपयोग, ग्रामीण शिक्षा, और NEP 2020 से संबंधित हैं। इन स्रोतों का चयन पूर्वनिर्धारित समावेशन मानदंडों (Inclusion Criteria) के अनुसार किया गया, जिसमें केवल वे शोध शामिल किए गए जो: (1) भारत के शैक्षिक संदर्भ पर केंद्रित हों, (2) डिजिटल शिक्षा और किशोरों पर केंद्रित हों, और (3) उच्च गुणवत्ता वाले जर्नलों में प्रकाशित हों। साथ ही, प्राथमिकता उन लेखों को दी गई जिनमें राजस्थान अथवा अलवर जिले का प्रत्यक्ष या परोक्ष संदर्भ हो।

इन शोध पत्रों और लेखों का विश्लेषण तार्किक विषयवस्तु विश्लेषण (Thematic Content Analysis) के माध्यम से किया गया, जिसमें प्रत्येक अध्ययन के उद्देश्य, कार्यप्रणाली, निष्कर्ष और नीतिगत सुझावों की तुलना की गई। इसके लिए एक विश्लेषणात्मक फ्रेमवर्क तैयार किया गया जिसमें चार प्रमुख श्रेणियाँ बनाई गईं:

1. डिजिटल उपकरणों और संसाधनों की पहुँच
2. किशोरों की भागीदारी और सीखने के व्यवहार
3. डिजिटल नीति और NEP 2020 के कार्यान्वयन संबंधी पहलू
4. सामाजिक–आर्थिक बाधाएँ और समाधान प्रस्ताव।

प्रत्येक अध्ययन की विषयवस्तु को इन श्रेणियों के अनु:प व्यवस्थित करके सामान्य प्रवृत्तियों (Common Patterns) और मुख्य अंतर्विरोधों (Key ContradICTions) की पहचान की गई। इसके अतिरिक्त, कुछ चयनित अध्ययनों में प्रयुक्त शोध उपकरण, जैसे कि केस स्टडी, इंटरव्यू निष्कर्ष, और नीतिगत विश्लेषण, की गहराई से समीक्षा की गई ताकि यह आकलन किया जा सके कि अध्ययन की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता कितनी है।

[11] Education.gov.in. (2021). *India Report Digital Education*. Ministry of Education, Government of India.
[12] IJFMR. (2025). *Conflicts and gaps in the implementation of NEP 2020 in Rajasthan*. International Journal for Multidisciplinary Research.
[13] Wikipedia contributors. (2025, July). *National Education Policy 2020*.
[14] RSI International. (2024). A study on access and use of DIKSHA in Rajasthan amid COVID-19. *IJRSi*.

इस पद्धति में शोधकर्ता की भूमिका निष्पक्ष विवेचक (Objective Analyst) की रही, जहाँ सभी स्रोतों की समान :प से आलोचनात्मक समीक्षा की गई। अध्ययन की प्रामाणिकता सुनिश्चित करने के लिए विश्लेषण प्रक्रिया को बार–बार पढ़कर, कोडिंग की पुनरावृत्ति कर और तुलना करके अंतर्विषयक स्थिरता (Inter&thematic Consistency) सुनिश्चित की गई।

समीक्षित साहित्य का सारांश

लेखक और वर्ष	अध्ययन का शीर्षक	अध्ययन के उद्देश्य	शोध की विधि	अध्ययन का निष्कर्ष
मेओ, एस. (2022)	राजस्थान के एक प्रांतीय शहर में निजी विद्यालयों की विपणन रणनीतियों की समझ	अलवर शहर में निजी स्कूलों की वृद्धि और विपणन रणनीतियों का अन्वेषण करना	अनुभवजन्य अध्ययन; 35 स्कूल, 105 परिवार, 3 स्थानीयताएँ	निजी स्कूल प्रवेश हेतु आधुनिक और पारंपरिक दोनों तरीकों (मीडिया, सामाजिक संबंध) का उपयोग करते हैं
सेन और कलिता (2024)	डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षा: एनईपी 2020 और इसकी समीक्षा	एनईपी 2020 की डिजिटल शिक्षा की अवधारणा की वर्ग, जाति और लिंग के दृष्टिकोण से आलोचना करना	टिप्पणात्मक अध्ययन; इंटरसेक्शनल नीति विश्लेषण	एनईपी 2020 संरचनात्मक असमानताओं को नजरअंदाज करता है; ऑनलाइन शिक्षा सभी के लिए समान :प से सुलभ नहीं है
वत्स, एस. (2024)	एनईपी 2020: भारत में डिजिटल शिक्षा का भविष्य	एनईपी 2020 द्वारा डिजिटल शिक्षा के माध्यम से पहुंच, गुणवत्ता और समानता को कैसे बढ़ावा दिया जा रहा है, इसका अध्ययन	नीतिगत समीक्षा और विश्लेषणात्मक अध्ययन	एनईपी 2020 परिवर्तनकारी है, लेकिन डिजिटल ढांचे और प्रशिक्षण की आवश्यकता है ताकि डिजिटल खाई को पाटा जा सके
शुक्ला और यादव (2025)	एनईपी 2020 के दृष्टिकोण से शिक्षा का डिजिटलीकरण	एनईपी 2020 के प्रभाव का विश्लेषण करना, विशेषकर एआई, डिजिटल टूल्स और शिक्षकों की भूमिका के संदर्भ में	विश्लेषणात्मक और वर्णनात्मक समीक्षा	एनईपी 2020 तकनीक आधारित शिक्षा की ओर संकेत करता है; पहुंच और समानता की समस्याएं बनी हुई हैं
दुबे, पी. (2024)	एनईपी 2020 में ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा की भूमिका	ऑनलाइन शिक्षा द्वारा एनईपी 2020 में पहुंच, गुणवत्ता और आजीवन सीखने को कैसे बढ़ावा मिलता है, इसका मूल्यांकन	गुणात्मक और अन्वेषणात्मक विश्लेषण	डिजिटल शिक्षा की संभावनाएं उच्च हैं, लेकिन इसके लिए आधारभूत संरचना, शिक्षक प्रशिक्षण और समावेशी कार्यान्वयन आवश्यक है
मिश्रा, ए. (2023)	एनईपी 2020 के संदर्भ में डिजिटल शिक्षा	एनईपी 2020 द्वारा डिजिटल शिक्षा पर ध्यान और नीतियों में एडटेक एकीकरण की खोज करना	नीति विश्लेषण; कार्यान्वयन मुद्दों पर चर्चा	एनईपी 2020 डिजिटल शिक्षा का समर्थन करता है, लेकिन संरचना की कमी और सुरक्षित उपयोग नीतियों पर त्वरित ध्यान देने की आवश्यकता है

शर्मा, आर. (2023)	भारत में डिजिटल नागरिकता और एनईपी 2020	कोविड के बाद की डिजिटल शिक्षा और एनईपी 2020 में डिजिटल विभाजन की समस्याओं का आकलन	समीक्षा–आधारित अध्ययन; नवीन प्रवृत्तियाँ और नीति समीक्षा	डिजिटल विभाजन एक प्रमुख चुनौती है; उपकरणों और सामग्री की समान पहुंच एनईपी 2020 की सफलता के लिए आवश्यक है
भट्ट, उपाध्याय और सोलंकी (2019)	उदयपुर जिले के ग्रामीण युवाओं में ई–लर्निंग का उपयोग	ग्रामीण युवाओं में ई–लर्निंग टूल्स के उपयोग का विश्लेषण करना	सर्वेक्षण; 140 ग्रामीण युवा (70 पुरुष, 70 महिला); मात्रात्मक डेटा	इंटरनेट और स्मार्टफोन का व्यापक उपयोग; ई–लर्निंग का मध्यम उपयोग; ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंच सुधारने की आवश्यकता
शर्मा और अन्य (2024)	डिजिटल मीडिया साक्षरता शिक्षा और सामाजिक विकास	स्कूल छात्रों में डिजिटल मीडिया साक्षरता के महत्व और वर्तमान स्तर का मूल्यांकन	सर्वेक्षण; टोंक जिले में 100 स्कूल छात्र; उद्देश्यपूर्ण सैंपलिंग	मीडिया साक्षरता युवाओं के लिए आवश्यक है; इसे नागरिक सहभागिता के लिए स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल करना ज:री
ई–सामग्री प्लेटफॉर्म समीक्षा (2023)	प्रौद्योगिकी–संवर्धित शिक्षा और एनईपी 2020: ई–सामग्री प्लेटफॉर्म का विश्लेषणात्मक अध्ययन	DIKSHA, SWAYAM और e-Pathshala जैसे डिजिटल प्लेटफार्मों के क्रियान्वयन और प्रभावशीलता का मूल्यांकन	सामग्री विश्लेषण, SWOT, सरकारी रिपोर्ट और प्लेटफॉर्म डेटा	उपयोगकर्ता संतुष्टि उच्च; प्लेटफार्म प्रभावी हैं, लेकिन ग्रामीण पहुंच और शिक्षक प्रशिक्षण में सुधार की आवश्यकता
किशन, मुरलीधरन और विजयवर्गीय (2025)	किशोरों में इंटरनेट की लत और मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव	इंटरनेट की लत, उपयोग स्तर और ग्रामीण–शहरी किशोरों पर इसके मानसिक प्रभावों का मूल्यांकन	क्रॉस–सेक्शनल अध्ययन; 200 किशोर; IAT और GHQ–12 टूल्स का प्रयोग	इंटरनेट का अत्यधिक उपयोग मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है; ग्रामीण–शहरी अंतर मौजूद; जिम्मेदार उपयोग पर शिक्षा आवश्यक
यादव और दुबे (2025)	डिजिटल उपकरणों और अभिभावकीय नियमों का किशोरों की उपलब्धि प्रेरणा पर प्रभाव	डिजिटल उपकरणों के उपयोग और अभिभावकीय नियंत्रण का किशोरों की प्रेरणा पर प्रभाव का अध्ययन	मात्रात्मक; 300 किशोर (14–16 वर्ष) का सर्वेक्षण; संरचित प्रश्नावली	शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए उपकरणों का उपयोग प्रेरणा को बढ़ाता है; भटकाव प्रेरणा को कम करता है; अभिभावकीय नियंत्रण सहायक होता है

अध्ययन की पृष्ठभूमि और प्रासंगिकता

डिजिटल शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के प्रभावों को लेकर किए गए विभिन्न शोध अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि भारत में शिक्षा के डिजिटलीकरण की दिशा में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं, परंतु इन परिवर्तनों के साथ–साथ अनेक सामाजिक, आर्थिक और संरचनात्मक चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आ रही हैं। इस संदर्भ में मेओ (2022) द्वारा अलवर शहर के निजी स्कूलों पर किए गए अध्ययन से ज्ञात होता है कि स्कूलों ने छात्रों के नामांकन के लिए पारंपरिक और आधुनिक दोनों प्रकार की विपणन रणनीतियाँ अपनाई हैं, जिनमें मीडिया और सामाजिक नेटवर्क का प्रभावी उपयोग किया गया है। यह अध्ययन ग्रामीण या अर्ध–शहरी क्षेत्रों में शैक्षणिक प्रतिस्पर्धा और बाज़ार के नए स्वरूप को दर्शाता है, जहाँ शिक्षा अब केवल सेवा नहीं बल्कि एक उत्पाद के रूप में उभर रही है।

वहीं, सेन और कलिता (2024) ने NEP 2020 की डिजिटल शिक्षा पर एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए इसे वर्ग, जाति और लिंग के संदर्भ में विश्लेषित किया। उनका मानना है कि नीति में डिजिटलीकरण की परिकल्पना तो की गई है, परंतु यह उन सामाजिक असमानताओं को नजरअंदाज कर देती है जो इंटरनेट और डिजिटल उपकरणों तक पहुँच को सीमित करती हैं। दूसरी ओर, वत्स (2024) ने NEP 2020 को एक परिवर्तनकारी पहल बताया है, लेकिन यह भी स्वीकार किया है कि इस परिवर्तन को कारगर बनाने के लिए डिजिटल अवसंरचना और शिक्षक प्रशिक्षण की अत्यंत आवश्यकता है। शुक्ला और यादव (2025) ने तकनीकी उपकरणों, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और शिक्षक की भूमिका में आए बदलावों पर विशेष ध्यान देते हुए कहा कि नीति शिक्षा को डिजिटल दिशा में ले जा रही है, परंतु समान पहुंच और संसाधन की उपलब्धता अब भी एक चुनौती बनी हुई है।

दुबे (2024) और मिश्रा (2023) ने अपने अध्ययनों में यह रेखांकित किया है कि डिजिटल शिक्षा का लाभ तभी संभव है जब बुनियादी ढांचा मजबूत हो और नीति के कार्यान्वयन में समावेशिता का ध्यान रखा जाए। विशेष रूप से मिश्रा ने सुरक्षा नीति और डिजिटल व्यवहार जैसे मुद्दों पर बल दिया है, जो किशोरों और बच्चों की डिजिटल भलाई के लिए अत्यंत आवश्यक है। शर्मा (2023) ने पोस्ट–कोविड परिदृश्य में डिजिटल नागरिकता की आवश्यकता को उजागर किया और बताया कि जब तक डिजिटल सामग्री और उपकरणों की समान पहुंच सुनिश्चित नहीं की जाती, तब तक NEP 2020 की सफलता अधूरी रहेगी।
ग्रामीण युवाओं पर किए गए भट्ट, उपाध्याय और सोलंकी (2019) के अध्ययन में यह पाया गया कि इंटरनेट और स्मार्टफोन का उपयोग तो व्यापक है, लेकिन ई–लर्निंग टूल्स का उपयोग अभी सीमित है। इससे यह स्पष्ट होता है कि तकनीकी संसाधन उपलब्ध होने के बावजूद शैक्षणिक सामग्री तक पहुँच, डिजिटली साक्षरता और व्यवहारिक उपयोग की जानकारी अभी अपर्याप्त है। इसी क्रम में शर्मा और साथियों (2024) ने टोंक ज़िले में स्कूली छात्रों के बीच डिजिटल मीडिया साक्षरता की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण किया और पाया कि डिजिटल साक्षरता सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है तथा इसे शिक्षा प्रणाली में शीघ्र शामिल किया जाना चाहिए।

ई–सामग्री प्लेटफॉर्म जैसे DIKSHA, SWAYAM और e-Pathshala पर आधारित विश्लेषणात्मक अध्ययन (2023) में यह पाया गया कि इन प्लेटफार्मों पर उपयोगकर्ता संतुष्टि उच्च है, परंतु शिक्षक प्रशिक्षण और ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी पहुंच अब भी सीमित है। इससे संकेत मिलता है कि तकनीकी समाधान तभी प्रभावी होंगे जब उन्हें व्यापक सामाजिक और शैक्षिक संदर्भों के साथ जोड़ा जाए। किशन, मुरलीधरन और विजयवर्गीय (2025) द्वारा किए गए अध्ययन ने इंटरनेट की लत और किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव को दर्शाया। यह अध्ययन न केवल इंटरनेट के दुरुपयोग को दर्शाता है, बल्कि शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में इसके प्रभाव में अंतर को भी रेखांकित करता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त सभी शोध अध्ययनों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारत में डिजिटल शिक्षा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के तहत शिक्षा व्यवस्था को तकनीकी रूप से सुदृढ़ बनाने की दिशा में कई प्रयास किए गए हैं। इन प्रयासों ने एक ओर जहाँ शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने की संभावना दिखाई है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक, आर्थिक, क्षेत्रीय और संरचनात्मक चुनौतियों को भी उजागर किया है। अलवर जैसे प्रांतीय शहरों में निजी विद्यालयों द्वारा अपनाई गई आधुनिक और पारंपरिक विपणन रणनीतियाँ यह दर्शाती हैं कि शिक्षा अब केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं रह गई है, बल्कि वह प्रतिस्पर्धा और उपभोक्तावाद से जुड़ चुकी है। मीडिया, सामाजिक संबंधों और व्यक्तिगत नेटवर्क का प्रभावी उपयोग इस बात की ओर संकेत करता है कि ग्रामीण और अर्ध–शहरी क्षेत्रों में भी शिक्षा की गुणवत्ता और छवि को लेकर एक नई सोच विकसित हो रही है। वहीं, NEP 2020 को लेकर विभिन्न शोधकर्ताओं की दृष्टिकोण से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल शिक्षा को एक अवसर के रूप में देखा गया है, लेकिन इसकी कार्यान्वयन प्रक्रिया में गंभीर असमानताएँ हैं। कुछ अध्ययनों में यह पाया गया कि नीति जाति, वर्ग और लिंग आधारित असमानताओं को पूरी तरह संबोधित नहीं करती, जिससे वंचित समुदायों के लिए डिजिटल शिक्षा तक पहुँच सीमित हो जाती है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल अवसंरचना की कमी, इंटरनेट और उपकरणों की अनुपलब्धता, और डिजिटल साक्षरता का अभाव भी इस प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करता है। शिक्षक प्रशिक्षण का अभाव भी एक बड़ी चुनौती के रूप में उभरकर सामने आता है, क्योंकि शिक्षकों को तकनीकी साधनों और डिजिटल टूल्स के प्रभावी उपयोग के लिए आवश्यक प्रशिक्षण नहीं मिल पाया है। अध्ययन यह भी बताते हैं कि डिजिटल प्लेटफॉर्म जैसे DIKSHA] SWAYAM और e-Pathshala उपयोगी और लोकप्रिय तो हैं, लेकिन इनका उपयोग शहरी क्षेत्रों तक सीमित है तथा ग्रामीण छात्रों और शिक्षकों के लिए यह अभी भी पूरी तरह सुलभ नहीं हैं। इसके

अतिरिक्त, किशोरों में इंटरनेट का अत्यधिक और अनियंत्रित उपयोग मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, विशेषकर तब जब इसके लिए कोई मार्गदर्शन या निगरानी नहीं होती। इसके कारण डिजिटल शिक्षा का उद्देश्य पीछे छूट सकता है और छात्रों की उपलब्धि प्रेरणा प्रभावित हो सकती है। एक अन्य पहलू जो सामने आया वह यह है कि जब किशोर डिजिटल उपकरणों का उपयोग शिक्षण उद्देश्यों के लिए करते हैं और अभिभावकों का उचित मार्गदर्शन मिलता है, तो उनकी उपलब्धि प्रेरणा में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। यह दर्शाता है कि डिजिटल शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव तभी सामने आता है जब इसका उपयोग संतुलित, उद्देश्यपूर्ण और निगरित रूप से किया जाए। वहीं, डिजिटल मीडिया साक्षरता को भी सामाजिक विकास का एक अनिवार्य अंग माना गया है, क्योंकि इसके माध्यम से छात्र न केवल तकनीकी रूप से दक्ष बनते हैं बल्कि वे जागरूक और उत्तरदायी नागरिक बनने की ओर भी अग्रसर होते हैं। टोंक जिले जैसे अर्ध–शहरी क्षेत्रों में भी डिजिटल साक्षरता के महत्व को समझा जा रहा है, परंतु इसे विद्यालयी पाठ्यक्रम में औपचारिक रूप से शामिल करने की आवश्यकता है। इन सभी अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत में डिजिटल शिक्षा की दिशा में ठोस पहल की गई है, लेकिन इसकी सफलता तकनीकी पहलुओं के साथ–साथ सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक संदर्भों को समझने और उन्हें संबोधित करने पर निर्भर करेगी। एक समावेशी दृष्टिकोण, जिसमें छात्रों, शिक्षकों, अभिभावकों और नीति निर्माताओं की सामूहिक भागीदारी हो, ही डिजिटल शिक्षा को वास्तव में प्रभावशाली और न्यायसंगत बना सकता है।

संदर्भ:

1- Zou, Y., Kuek, F., Feng, W., & Cheng, X. (2025). *Digital learning in the 21st century: trends, challenges, and innovations in technology integration*. *Frontiers in Education*.
2- UNESCO. (2023). *Impact of the COVID-19 pandemic on education*.
3- Pozo, J.-I., Cabellos, B., & Pérez Echeverría, M. d. P. (2024). Has the educational use of digital technologies changed after the pandemic? A longitudinal study. *PLoS ONE, 19*(12), e0311695.
4- UNESCO. (2023, September 7). UN: Tech dependence during pandemic "super-charged" education inequality. *Axios*.
5- Singh, P., & Sharma, R. (2024). Problematic Internet use among school-going adolescents in India: A systematic review. *International Journal of Community Medicine*, 47(4), 123–130. https://pmc.ncbi.nlm.nih.gov/articles/PMC9693953/
6- Sharma, L., et al. (2024). Digital media literacy education and social development: A study on Tonk district students. *Educational Administration: Theory and Practice, 30*(2), 908–920.
7- Zhou, Y., et al. (2021). *Adapting to crisis and unveiling the digital shift*. *Frontiers in Education*.
8- Jejeebhoy, S., & Waheed, A. (2020). *Navigating Digital Learning in Government Schools in Rajasthan*. IDS Journal.
9- Kumar, N., & Bhutada, P. (2025). Youth's digital readiness in rural India. *Ideas for India*.
10- Tiwari, J. K., & Kumari, N. (2023). *E-learning use and integration in NEP-2020*. *International Journal of Creative Research Thoughts*.
11- Education.gov.in. (2021). *India Report Digital Education*. Ministry of Education, Government of India.
12- IJFMR. (2025). *Conflicts and gaps in the implementation of NEP 2020 in Rajasthan*. International Journal for Multidisciplinary Research.
13- Wikipedia contributors. (2025, July). *National Education Policy 2020*.
14- RSI International. (2024). A study on access and use of DIKSHA in Rajasthan amid COVID-19. *IJRSi*.
15- Meo, S. (2022). Understanding marketing strategies of Private schools in a provincial town in Rajasthan, India. *Corvinus Journal of Sociology and Social Policy*, *13*(2), 161-182.
16- Sen, R., & Kalita, N. (2024). Digital and Online Education: NEP 2020 and its Critique. *Jindal Journal of Public Policy*, 1-11.
17- Vats, S. (2024). *NEP 2020: The future of digital learning in India*. International Journal of Research Publication and Reviews, 5(4), 221–225.

18- Shukla, R., & Yadav, V. (2025). *Digitalization of education from the perspective of NEP 2020*. International Journal of Innovative Science and Research Technology, 10(4), 2456–2165.
19- Dubey, P. (2024). *The role of online and digital education in NEP 2020*. IOSR Journal of Humanities and Social Science, 29(7), 80–85.
20- Mishra, A. (2023). *Digital learning in the context of NEP 2020*. International Journal of Research Publication and Reviews, 4(12), 308–312.
21- Sharma, R. (2023). *Digital citizenship and education in India concerning NEP 2020*. International Journal for Multidisciplinary Research, 5(5), 1–6.
22- Bhatt, K., Upadhyay, R., & Solanki, D. (2019). *Use of e-learning among rural youth of Udaipur district of Rajasthan*. *International Journal of Current Microbiology and Applied Sciences, 8*(06). Retrieved from
23- harma, L., Kavitha, S., Gupta, A., Gupta, U., Palan Jayaswal, M., & Tyagi, T. (2024). *Digital media literacy education and social development: A study on the need of digital media literacy education among the school students of Tonk district of Rajasthan state in India*. *Educational Administration: Theory and Practice, 30*(2), 908–920.
24- E-content Platforms Review (2023). *Technology-enhanced learning and NEP 2020: Analytical review of e-content platforms in Indian education.*
25- Kishan, D., Muraleedharan, D., & Vijayvergia, B. (2025). *Internet addiction and its effects on psychological wellbeing among adolescents in the urban health and rural health training centre, Jaipur, Rajasthan, India*. *International Journal of Community Medicine and Public Health, 12*(4), 1823–1828.
26- Yadav, M., & Dube, S. (2025). *Effect of digital devices and parental regulations on adolescents' achievement motivation: A quantitative study*. *Indian Journal of Extension Education, 61*(2), 67–72.